

## पारंपरिक भारतीय मानसून पूर्वानुमान प्रथाओं से प्राप्त अन्तर्दृष्टि

डॉ. कुमुद पुरोहित

शिक्षा विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

### सारांश

भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन शामिल हैं जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और गहन विश्लेषण से विकसित हुए हैं। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में, मानसून की भविष्यवाणी करना महत्वपूर्ण है। पारंपरिक भारतीय ज्ञान विरासत में प्रकृति के गहन अवलोकन पर आधारित भारतीय विद्वानों के विद्वतापूर्ण ग्रंथ और लोक ज्ञान दोनों शामिल हैं। यह आलेख मानसून की भविष्यवाणी के महत्वपूर्ण प्राकृतिक, जैविक और लोक संकेतकों (जानवरों के व्यवहार, बादल निर्माण, ग्रहों की स्थिति, नक्षत्रों और पौधों की प्रतिक्रियाओं जैसे प्राकृतिक संकेतकों के सदियों पुराने अवलोकनों पर आधारित है, जो वराहमिहिर द्वारा बृहत् संहिता, पाणिनि द्वारा अष्टाध्यायी और मेघमाला जैसे बौद्धिक ग्रंथों और गुजराती में भडली वाक्यों, मराठी में सहदेव भडली, राजस्थान में बुजुर्गा की कहावतों) जैसे अवलोकन अनुभव जनित सहज ज्ञान आधारित मौखिक लोकसाहित्यपर चर्चा करता है।

**मूल शब्द:** पारंपरिक भारतीय मानसून पूर्वानुमान, भारतीय ज्ञान परम्परा, प्राकृतिक संकेतक, लोक ज्ञान मौखिक, लोकसाहित्य

### भारतीय ज्ञान परम्परा – पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ

मानसून का हमारे हृदय में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, किसान मानसून का बहुत इंतजार करते हैं। मानसून का संबंध सूखे और आपदा से भी है। इसलिए मानसून की भविष्यवाणी करना जरूरी हो जाता है। भारतीय सदियों से मानसून की भविष्यवाणी करते रहे हैं। आज हमें मानसून की भविष्यवाणी से संबंधित उस पारंपरिक ज्ञान को फिर से संजोने की जरूरत है। पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों<sup>2</sup> मिलियन (बीस लाख) से अधिक वर्षों से चली आ रही हैं, जब होमो हैबिलिस ने अपने अवलोकन और प्रयोग के उपकरणों के माध्यम से प्रकृति के साथ संवाद करना प्रारम्भ किया था।<sup>1</sup>

संयुक्त राष्ट्र 'पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों' को इस प्रकार परिभाषित करता है: "पारंपरिक ज्ञान या स्थानीय ज्ञान जीवन की जटिलताओं को समझने और अक्सर प्रतिकूल वातावरण में जीवित रहने में मानवीय उपलब्धि का एक रिकॉर्ड है।"<sup>2</sup>

पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली, एक समृद्ध भंडार है, जिसे पुनरुद्धार, पुनः अन्वेषण और पुनः मान्यता की आवश्यकता है, इसमें हमारे जीवन की सभी आधुनिक समस्याओं के बारे में व्यावहारिक रूप से बताने के लिए बहुत कुछ है। मनुष्य और प्रकृति के बीच के संबंध को अथर्ववेद सूक्त – "माता भूमि पुत्रोहं पृथिव्या" में गहनता से प्रतिध्वनित किया गया है।

जिज्ञासा, अन्वेषण, प्रकृति के तत्वों का अवलोकन, सार्थक पैटर्न की खोज, तर्क, गणना और किसी स्थान की भौगोलिक प्रकृति और पर्यावरणीय घटनाओं के बीच संबंधों की व्याख्या करने की भारतीय दार्शनिक विरासत में निहित पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली, एक समुदाय के भीतर मौखिक परंपराओं के माध्यम से युगों से लगातार बहने वाला एक अधिक उन्नत विज्ञान था।

### आदित्यत जायते वृष्टि

भारतीय कृषि कम से कम 10,000 वर्ष पुरानी है। जब तक ऋग्वेद (लगभग 8000 ईसा पूर्व) संकलित किया गया था, तब तक आज प्रचलित बुनियादी कृषि संचालन प्रारम्भ किया जा चुका था। ऋषियों, द्रष्टाओं, विद्वानों और वैज्ञानिकों की भूमि भारत के पास प्राचीन ग्रंथों और स्थानीय मौखिक परंपराओं के विशाल भंडार हैं, जो मौसम की भविष्यवाणी के मामले में विश्व का नेतृत्व कर सकते हैं। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग का आदर्श वाक्य "आदित्यत जायते वृष्टि" छठी शताब्दी के ज्योतिषी-गणितज्ञ वराहमिहिर ने अपनी बृहत्संहिता में लिखा था जिसका अर्थ है कि सूर्य बारिश को जन्म देता है।

### पारंपरिक मौसम पूर्वानुमान

भारत में एक समृद्ध पारंपरिक सामुदायिक मौसम पूर्वानुमान प्रणाली रही है, जो जानवरों के व्यवहार, बादल निर्माण, ग्रहों की स्थिति, नक्षत्रों और पौधों की प्रतिक्रियाओं जैसे प्राकृतिक संकेतकों के सदियों पुराने अवलोकनों पर आधारित है, जो वराहमिहिर द्वारा बृहत् संहिता, पाणिनि द्वारा अष्टाध्यायी और मेघमाला जैसे बौद्धिक ग्रंथों और गुजराती में भडली वाक्यों, मराठी में सहदेव भडली, राजस्थान में बुजुर्गा की कहावतों जैसे अवलोकन अनुभव जनित सहज ज्ञान आधारित मौखिक लोकसाहित्य का संगम है।

### भडली का सिद्धांत

बादल मौसम के प्रमुख संकेतक हैं। उपग्रहों द्वारा पृथ्वी का मानचित्रण शुरू करने से बहुत पहले, मौसम का पूर्वानुमान प्राचीन ग्रंथों और स्थानीय ज्ञान में दी गई जानकारी पर आधारित था। सौराष्ट्र क्षेत्र के 10वीं/11वीं सदी के विद्वान भडली ने 'आकाशीय भ्रूण' के विकास के लिए जिम्मेदार दस मौसम संबंधी (चर) संकेतकों पर गीत लिखे: ये बादल, हवाएं, बिजली, आकाश के रंग, गड़गड़ाहट, गरज, ओस, बर्फ, इंद्रधनुष और सूर्य/चंद्रमा के चारों ओर वृत्त थे। भडली ने पूरे वर्ष में वर्षा के पैटर्न को चिह्नित करने के लिए 12 चंद्र महीनों में से प्रत्येक के दौरान अंतर-ग्रहीय, तारकीय प्रणालियों के साथ इन चरों की परस्पर क्रिया अवलोकन के आधार पर भडली वाक्यों के नाम से जाने जाने वाले गीत लिखे।<sup>4</sup> ये आज भी गुजरात और राजस्थान के किसानों को मानसून की भविष्यवाणी करने में मार्गदर्शन कर रहे हैं और अधिकांश समय सटीक साबित हुए हैं।

रमन (1960) ने सामान्य वायुमंडलीय स्थितियों को "ईथर भ्रूण (आकाशीय भ्रूण)" की स्वस्थ अवधारणा संकेतक के रूप में पहचाना— जो बाद में वर्षा के रूप में परिणत होती है।<sup>5</sup> इनमें से कुछ नीचे सूचीबद्ध हैं:

1. उत्तर, उत्तर-पूर्व और पूर्व से हल्की और अनुकूल हवा
2. साफ आसमान
3. चंद्रमा या सूर्य के चारों ओर मंद, सफेद गहन प्रभामंडल
4. कौवे के अंडे के समान काला गहरे रंग का आकाश
5. विशाल, उजले घने बादलों से घिरा हुआ आकाश
6. सुई के आकार या तलवार के आकार के बादल
7. रक्त-लाल बादल
8. सुबह/शाम इंद्रधनुष
9. गरज की धीमी गड़गड़ाहट

10. आकाशीय विद्युत (बिजली चमकना)
11. "आभासी सूरज" की उपस्थिति
12. पूर्ण रूप में तथा मंद प्रकाश से चमकते हुए ग्रह एवं तारे

### वृक्ष – मानसून के संकेतक

कनानी और अन्य (1995) ने विभिन्न वृक्ष प्रजातियों का दस्तावेजीकरण किया जिनका उपयोग स्थानीय समुदायों द्वारा मानसून के संकेतक के रूप में किया गया है।<sup>6</sup> (तालिका 1 देखें)।

तालिका 1: प्रजातियों का नाम, संकेतक और अपेक्षित परिणाम

| प्रजातियों का नाम   | संकेतक                   | अपेक्षित परिणाम        |
|---|--------------------------|------------------------|
| महुआ-मधुका लॉगिफोलिया<br>बांस प्रजाति                       | पत्तों की अच्छी उपस्थिति | अच्छा मानसून<br>सूखा   |
| बेर (ज़िज़िफस मॉरिटियाना)                                   | फलों की भारी बहार        | औसत मानसून             |
| दर्भ कुशा घास एराग्रोस्टिस<br>बेल या बिली, एगल<br>मार्मेलोस | पत्तों की अच्छी उपस्थिति | असामान्य<br>मानसून     |
| पीपल, फिकस रिलिजिओसा<br>खेजड़ी, प्रोसोपिस सिनेरिया          | पत्तों की अच्छी उपस्थिति | पर्याप्त वर्षा<br>सूखा |
| कपित्थ या कैथ, कबिट,<br>लिमोनिया एसिडिसिमा                  | अच्छी वृद्धि             | तूफानी वर्षा           |
| नीम, एजाडिरेक्टा इंडिका                                     | भारी बहार                | सूखा                   |

पिशारोटी (1993) ने बताया कि अमलतास का पेड़ या गोल्डन शावर पेड़ (कैसिया फिस्टुला) वर्षा का एक अनोखा सूचक है। इसमें मानसून की शुरुआत से लगभग 45 दिन पहले सुनहरे पीले फूलों के गुच्छे प्रचुरता से लगते हैं। इसका उल्लेख वराहमिहिर (लगभग 8वीं शताब्दी) द्वारा लिखित ब्रह्मसंहिता में भी है।<sup>7</sup>

### पशु पक्षी-मानसून के संकेतक

सावलिया और अन्य (1991) और गोलाकिया (1992) के अनुसार, पक्षियों और जानवरों के विशिष्ट व्यवहार पर टिप्पणियों का उपयोग वर्षा के संकेतक के रूप में भी किया गया है।<sup>8</sup> (तालिका 2 देखें)।

तालिका 2: वर्षा के पूर्वानुमानकर्ता के रूप में पशु पक्षियों का व्यवहार

| संकेतक  | अपेक्षित परिणाम  |
|---|--|
| धूल में नहाती गौरैया  | अच्छी वर्षा  |
| कचिदा (गिरगिट) पेड़ पर चढ़कर<br>काले-सफेद-लाल रंग का हो जाये                                    | सन्निकट  |
| जयेष्ठ (मई) के शुरुआती दिनों में<br>मैंढक गाना शुरू कर दे                                       | शीघ्र वर्षा  |
| बटेर (एक पक्षी) जोड़े में गाते हैं  | वर्षा की निश्चितता                                     |
| मोर लगातार रोते (कुहकते) हैं  | एक-दो दिन में बारिश हो<br>जायेगी                       |
| कौवे रात में और लोमड़ी दिन में रोते<br>हैं  | भीषण सूखा  |
| टिटोडी या लैपविंग पक्षी रात के समय<br>विशेषकर नदी तटों पर अंडे देती है                          | भारी वर्षा   |
| कल्लेउ/बपैया/पपीहा (एक पक्षी)<br>सुबह-सुबह गीत गाता है  | कल्लेउ/बपैया/पपीहा (एक<br>पक्षी) सुबह-सुबह गीत गाता है |
| साप पेड़ों पर चढ़ जाता है   | अनावृष्टि, सूखा  |
| ऊँट उत्तर-पूर्व दिशा की ओर मुख<br>किये रहता है, बकरी चरती नहीं है,<br>कौआ अपना घोंसला नोंचता है | तुरंत वर्षा  |
| जयेष्ठ पूर्णिमा (मई) के दिन पक्षी धूल<br>में स्नान करते हैं                                     | अति वर्षा  |

### वर्षा की पारंपरिक मान्यता

गुजरात कृषि विश्वविद्यालय के जूनागढ़ परिसर के परषोतमभाई आर. कनानी ने निम्नलिखित पारंपरिक मान्यताओं के आधार पर सौराष्ट्र के किसानों के साथ 1990 से 2003 तक सहभागी मौसम विज्ञान आकलन और पूर्वकथन किये।<sup>9</sup>:

1. "यदि जयेष्ठ के दूसरे दिन बिजली चमकने और बादलों की गर्जना (हल्की गड़गड़ाहट) के साथ बारिश होती है, तो अगले बहत्तर दिनों तक बारिश नहीं होगी" (भड़ली लगभग 12वीं शताब्दी)
2. यदि रोहिणी नक्षत्र के आरंभ में बादलों की गर्जना (हल्की गड़गड़ाहट) के साथ बिजली चमकने के साथ वर्षा होती है, तो अगले 72 दिनों तक वर्षा नहीं होगी।
3. यदि आद्रा नक्षत्र में वर्षा होती है, तो अगले तीन नक्षत्रों यथा पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा में भी वर्षा होगी।
4. यदि पुनर्वसु नक्षत्र में वर्षा होगी, तो पुष्य नक्षत्र के दौरान वर्षा अवश्य होगी।
5. यदि आषाढ माह के प्रथम पखवाड़े की द्वितीया एवं पंचमी तिथि को वर्षा होती है, तो आषाढ के दूसरे पखवाड़े और श्रावण के पहले पखवाड़े में क्रमशः अधिक वर्षा अवश्य होगी।
6. यदि आषाढ महीने का 11वां दिन (जिसे देव पोधी एकादशी के नाम से जाना जाता है) रविवार, शनिवार या मंगलवार को पड़ता है, तो खाद्यान्न महंगा होगा और "बरसात के खतरे" (तूफान और प्राकृतिक आपदाओं के कारण नुकसान) होंगे।
7. यदि कार्तिक महीने के 12वें दिन, स्पष्ट चंद्रमा के साथ रात में आकाश साफ हो (पुष्य बंध योग के रूप में जाना जाता है), तो आगामी मानसून में ईश्वर भ्रूण (आकाशीय भ्रूण) विकसित होगा।
8. होली पर, होलिका जलाने से लगभग आधे घंटे पहले से लेकर जलने के लगभग आधे घंटे बाद तक, हवा की दिशा का अवलोकन, वर्ष के लिए वर्षा का पूर्वानुमान लगाने के लिए किया जा सकता है।
9. अक्षय तृतीया पर सुबह 3 बजे से सुबह 6 बजे तक हवा की दिशा का अवलोकन वर्ष के लिए वर्षा पैटर्न और अपेक्षित फसल उपज की भविष्यवाणी करने के लिए किया जाता है।

ये मान्यताएँ दो विशिष्ट दिनों, अर्थात् अक्षय तृतीया और होली त्योहार के दिन, हवा की दिशा पर आधारित थीं। भविष्यवाणियों न केवल मानसून के आकाशीय भ्रूण के बारे में की जा सकती थीं, बल्कि बीमारियों और कीटों की तीव्रता और अपेक्षित फसल पैदावार जैसे अतिरिक्त परिणामों के बारे में भी की जा सकती थीं।

आकलन के निष्कर्षों से पता चला कि नौ में से आठ परिकल्पनाएँ असत्य साबित नहीं हुईं। परिणामों ने यह संकेत दिया कि इनमें से कई मान्यताएँ मानसून के विश्वसनीय संकेतक होने की संभावना है।

पारीक और त्रिवेदी (2010) ने अपने केस अध्ययन में पाया कि अत्यधिक विषम पर्यावरणीय परिस्थितियों में रहने वाले आदिवासी समुदायों (भील, मीना, बंजारा, कथोड़ी, रेबारी, सांसी और कंजर) ने प्राकृतिक आपदा के लिए प्रारंभिक चेतावनियों और प्रभावी मुकाबला तंत्र के संबंध में स्वदेशी ज्ञान प्रणाली विकसित की है।<sup>10</sup> वर्ष प्रतिपदा गुड़ी पड़वा हिंदू नववर्ष पर राजस्थान के गांवों में ग्राम जोशी द्वारा पंचांग वाचन की एक रोचक परंपरा है, जो वराहमिहिर की बृहत् संहिता के आधार पर वर्षा पैटर्न, फसल की उपज और आपदा की भविष्यवाणी करता है और इससे स्थानीय किसानों को कृषि की बेहतर योजना बनाने और जलवायु और प्राकृतिक आपदाओं को कम करने में मदद मिलती है।<sup>11</sup>

पश्चिमी घाट और महाराष्ट्र में मानसून पर नजर रखने से संबंधित भारतीय मौसम विज्ञान विभाग की 5 वर्षीय परियोजना "मेघदूत" के तहत गैर सरकारी संगठन विश्व साइंटिफिक द्वारा किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि मछुआरे, किसान और आदिवासी मानसून की भविष्यवाणी करने के लिए प्राकृतिक संकेतकों का उपयोग करते हैं। मछुआरों को मानसून शुरू होने से ठीक पहले तट पर एट्रोप्लस, छोटी मछली की इक प्रजाति बड़ी संख्या में मिलती है। मेलघाट में, "कोरकू" जनजाति एक स्थानीय फूल "बहावा" द्वारा मानसून के आगमन की भविष्यवाणी करती है जो मानसून आने से 40 दिन पहले खिलता है। यह भी पाया गया कि कुछ क्षेत्रों में चींटियाँ जिस तरह से बांबी के आसपास व्यवहार करती हैं या कौवे जिस तरह से अपना घोंसला बनाते हैं, उसे मानसून की भविष्यवाणी करने के लिए देखा गया।  
12

### पक्षी- मानसून के जैविक संकेतक

पक्षी अपने वायुदाब के प्रति संवेदनशील कर्णपटों के माध्यम से महसूस कर सकते हैं। घरेलू गौरैया का गर्मियों में सूखी मिट्टी में कीचड़ स्नान करना भारी वर्षा का सूचक है। रेड-वेटल्ड लैपिंग कभी भी पेड़ों पर नहीं बैठती और हमेशा जमीन पर बने घोंसले में अंडे देती है। यदि घोंसला तालाब या नदी के सूखे जल भराव वाले क्षेत्र में पाया जाता है, तो इसका मतलब है कि आने वाले बरसात के मौसम में सूखा पड़ेगा और यदि उससे दूर तुलनात्मक रूप से ऊंचे स्थान पर पाया जाता है, तो भारी वर्षा होगी। यदि अंडे ऊर्ध्वाधर पाए जाते हैं, तो यह माना जाता है कि भारी वर्षा होगी और क्षैतिज स्थिति में पाए जाते हैं, तो रुक-रुक कर बारिश होगी। यदि चार अंडे हैं, तो भारी वर्षा का संकेत देते हैं और तीन अंडे हैं, तो सूखे से लेकर औसत वर्षा का संकेत देते हैं। यदि तीन में से दो अंडे पास-पास हों और एक दूर हो तो इसका मतलब है कि आने वाले बरसात के मौसम में दो महीने बारिश होगी और एक सूखा रहेगा। हवा का दबाव पक्षियों को वास्तव में प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, अबाबील के कान संवेदनशील होते हैं; जब बैरोमीटर का दबाव कम हो जाता है, तो वे यथासंभव जमीन के करीब उड़ते हैं, जहां हवा का घनत्व सबसे अधिक होता है। आम तौर पर, कम ऊंचाई पर उड़ने वाले पक्षी बारिश का संकेत होते हैं; ऊंची उड़ान साफ मौसम का संकेत देती है। मोरों का निरंतर शोर भी दो या तीन दिनों के भीतर वर्षा का एक आश्वस्त संकेत है। जून के महीने में देर रात कौवे का शोर मचाना आने वाले मानसून के मौसम में सूखे का संकेत देता है और यही संकेत दिन के समय सियार का रोना भी है।<sup>13</sup>

### होली के त्यौहार के माध्यम से मानसून पूर्वानुमान

पश्चिमी राजस्थान के किसान होली के त्यौहार के दिन मिट्टी के बर्तन को पूरी तरह से पानी से भरकर और उसके मुंह को कसकर बंद करके जमीन के नीचे रख देते हैं। अगली होली के दिन ग्रामीण उसे उस गड्ढे से निकालते हैं और जल स्तर का निरीक्षण करते हैं। यदि मटकी अभी भी पानी से पूरी तरह भरी हुई है तो अच्छे मानसून का संकेत देती है; यदि आधा भरा हुआ है तो यह सामान्य मानसून का संकेत देता है और यदि यह खाली है तो इसका मतलब है कि आगामी वर्षा ऋतु में सूखा पड़ेगा।<sup>14</sup>

होली की लौ से किसान आने वाले मानसून की भविष्यवाणी करते हैं:<sup>15</sup>

1. यदि लौ आकाश में सीधी खड़ी हो और मौसम शांत हो; यह आगामी अच्छे मानसून का संकेत है।
2. यदि होली के दिन; गरज, बारिश, तूफान या तेज़ गति वाली हवा चल रही हो तो मानसून में तेज़ बारिश होगी।

3. यदि लौ पूर्व की ओर मुड़ जाती है (यदि पछुआ हवा चलती है) तो आगामी बरसात के मौसम में मानसून सामान्य से बेहतर रहेगा।
4. यदि लौ आग्नेय दिशा में मुड़ जाए (हवा उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर चले) तो सूखा पड़ेगा।
5. यदि लौ दक्षिण दिशा की ओर मुड़ जाए (यदि हवाएं उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर चले) तो अकाल पड़ेगा।
6. यदि ज्वाला पश्चिम की ओर मुड़ती है (यदि हवाएं पूर्व से पश्चिम की ओर चलती हैं) तो मानसून सामान्य होगा।
7. यदि लौ उत्तर और ईशान दिशा में मुड़ जाए (यदि हवाएं दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम से उत्तर और उत्तर-पूर्व की ओर चले) तो आगामी मानसून में वर्षा औसत से अधिक होगी।
8. यदि लौ सभी दिशाओं में घूमती है, तो भारी सूखे का संकेत मिलता है।
9. यदि लौ नैऋत्य (उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम) दिशा की ओर मुड़ जाए तो यह भी अकाल का संकेत देता है।
10. यदि लौ वायव्य दिशा की ओर मुड़ जाती है (यदि हवाएं दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर चलती हैं) तो चक्रवात और धूल की संभावना अधिक होती है।

### डाकवचन – राजस्थानी कहावतों में वर्षा की भविष्यवाणी

वर्षा की भविष्यवाणी की पारंपरिक प्रथा में गाघ-भडूर कहावतों या डाक वचन का भी समृद्ध खजाना है, ये लोक कहावतें मौखिक परंपरा में पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित और हस्तांतरित होती रही हैं।<sup>16</sup>

शुक्रवार की बादरी, रही सनीचर छाया।

तो यों भाखे भडुरी, बिन बरसे ना जाए।।

भडुरी का कहना है कि शुक्रवार को आए बादल शनिवार को भी छाए रहे तो भारी बारिश की संभावना है।

रोहिनी बरसे मृग तपै, कुछ कुछ अद्रा जाय।

कहै घाघ सुने घाघिनी, स्वान भात नहीं खाय।।

यदि रोहिणी बरसे, मृगशिरा तपै और आर्द्रा में साधारण वर्षा हो जाए तो धान की पैदावार इतनी अच्छी होगी कि कुत्ते भी भात खाने से ऊब जाएंगे और नहीं खाएंगे।

सावन पहिले पाख में, दसमी रोहिनी होय।

महंग नाज अरु स्वल्प जल, विरला विलसै कोय।।

यदि श्रावण कृष्ण पक्ष में दशमी तिथि को रोहिणी हो तो समझ लेना चाहिए अनाज महंगा होगा और वर्षा स्वल्प होगी, विरले ही लोग सुखी रहेंगे।

सावन मास बहे पुरवइया।

बछवा बेच लेहु धनु गइया।।

अर्थात् यदि सावन महीने में पुरवैया हवा बह रही हो तो अकाल पड़ने की संभावना है। किसानों को चाहिए कि वे अपने बैल बेच कर गाय खरीद लें, कुछ दही-मट्टा तो मिलेगा।

पूस मास दसमी अंधियारी।

बदली घोर होय अधिकारी।

सावन बदि दसमी के दिवसे।

भरे मेघ चारो दिसि बरसे।।

यदि पूस बदी दसमी को घनघोर घटा छाया हो तो सावन बदी दसमी को चारों दिशाओं में वर्षा होगी।

पूस उजेली सप्तमी, अष्टमी नौमी जाज।

मेघ होय तो जान लो, अब सुभ होइहै काज।।

यदि पूस सुदी सप्तमी, अष्टमी और नवमी को बदली और गर्जना हो तो सब काम सुफल होगा अर्थात् सुकाल होगा।

सावन सुक्ला सप्तमी, जो गरजै अधिरात।  
बरसे तो झुरा परै, नाहीं समौ सुकाल।।  
यदि सावन सुदी सप्तमी को आधी रात के समय बादल गरजे और पानी बरसे तो झुरा पड़ेगा; न बरसे तो समय अच्छा बीतेगा।

आसाढी पूनो दिना, गाज बीजु बरसंत।  
नासे लच्छन काल का, आनंद मानो सत।।  
आषाढ की पूणिमा को यदि बादल गरजे, बिजली चमके और पानी बरसे तो वह वर्ष बहुत सुखद बीतेगा।

रोचक बात यह है कि ये कहावतें आज के इस आधुनिक युग में भी किसानों का बखूबी मार्गदर्शन कर रही हैं। पारंपरिक ज्ञान में बहुत कुछ है। डिजिटलीकरण के इस युग में, जहां हमारी नजरें मोबाइल और लैपटॉप स्क्रीन पर टिकी हुई हैं, हमें प्रकृति के साथ फिर से जुड़ने की जरूरत है, हमें युवाओं और छात्रों को प्रकृति को करीब से देखने और पैटर्न का पता लगाने, समझने और व्याख्या करने के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है। सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित हो रहे इस मौखिक पारंपरिक ज्ञान भंडार को प्रलेखित, शोधित और पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। आइए प्रकृति से जुड़ें और संवाद करें।

## संदर्भ

1. Traditional Knowledge Systems overview <https://indicmandala.com/traditional-knowledge-systems-overview/>
2. Background - Traditional Knowledge <https://www.un.org/development/desa/indigenouspeoples/wp-content/uploads/sites/19/2019/04/Traditional-Knowledge-background-FINAL.pdf>
3. Y.L. Nene “Utilizing Traditional Knowledge in Agriculture”
4. Parshotambhai R. Kanani “Validation of Traditional Meteorological Principles in Saurashtra, India” <https://www.millenniumassessment.org/documents/bridging/papers/kanani.pr.pdf>
5. Traditional Methods of Monsoon predictions in India [https://www.academia.edu/22128527/Traditional\\_Methods\\_of\\_Monsoon\\_Predictions\\_of\\_India](https://www.academia.edu/22128527/Traditional_Methods_of_Monsoon_Predictions_of_India)
6. Parshotambhai R. Kanani “Validation of Traditional Meteorological Principles in Saurashtra, India” <https://www.millenniumassessment.org/documents/bridging/papers/kanani.pr.pdf>
7. Parshotambhai R. Kanani “Validation of Traditional Meteorological Principles in Saurashtra, India” <https://www.millenniumassessment.org/documents/bridging/papers/kanani.pr.pdf>
8. Parshotambhai R. Kanani “Validation of Traditional Meteorological Principles in Saurashtra, India” <https://www.millenniumassessment.org/documents/bridging/papers/kanani.pr.pdf>
9. Parshotambhai R. Kanani “Validation of Traditional Meteorological Principles in Saurashtra, India” <https://www.millenniumassessment.org/documents/bridging/papers/kanani.pr.pdf>
10. Aparna Pareek, PC Trivedi. “Cultural Values and Indigenous Knowledge of Climate Change and Disaster

- Prediction in Rajasthan” Indian Journal of Traditional Knowledge,2011:10(1):183-189
11. Vidyadhar B Vaidya “The Ancient Science of Weather Forecasting in India” <https://scienceindiamag.in/the-ancient-science-of-weather-forecasting-in-india/>
12. <https://timesofindia.indiatimes.com/city/pune/local-indicators-can-help-predict-monsoon-behaviour-study/articleshow/10182283.cms>
13. Vaishnava Akhilesh “Traditional Predictors of monsoon in Rajasthan” IJRTI, 8(4). ISSN: 2456-3315
14. Vaishnava Akhilesh “Traditional Predictors of monsoon in Rajasthan” IJRTI, 8(4). ISSN: 2456-3315
15. Vaishnava Akhilesh “Traditional Predictors of monsoon in Rajasthan” IJRTI, 8(4). ISSN: 2456-3315
16. <https://sundayfarmer.wordpress.com/tag/gagh-aur-bhaddari-ki-kahavaten-dak-vachan/>  
<https://panchjanya.com/2022/04/05/227349/bharat/story-of-barkha-ghagh-bhaddis-speech-2/>